Free Download Ramayan In Gujarati Pdf

भी सालकी एक डाल तोड़ डाली और उसपर विनयशील लक्ष्मणको बैठाया॥ १४॥

सुखोपविष्टं रामं तु प्रसन्नमुदधिं यथा।
सालपुष्पावसंकीर्णे तस्मिन् गिरिवरोत्तमे॥ १५॥
ततः प्रहृष्टः सुग्रीवः श्लक्ष्णया शुभया गिरा।
उवाच प्रणयाद् रामं हर्षव्याकुलिताक्षरम्॥ १६॥

उस श्रेष्ठ पर्वतपर, जहाँ सब ओर सालके पुष्प बिखरे हुए थे, सुखपूर्वक बैठे हुए श्रीराम शान्त समुद्रके समान प्रसन्न दिखायी देते थे। उन्हें देखकर अत्यन्त हर्षसे भरे हुए सुग्रीवने श्रीरामसे स्निग्ध एवं सुन्दर वाणीमें वार्तालाप आरम्भ किया। उस समय आनन्दातिरेकसे उनकी वाणी लड़खड़ा जाती थी—अक्षरोंका स्पष्ट उच्चारण नहीं हो पाता था॥ १५-१६॥

अहं विनिकृतो भ्रात्रा चराम्येष भयार्दितः।
ऋष्यमूकं गिरिवरं हृतभार्यः सुदुःखितः॥ १७॥

'प्रभो! मेरे भाईने मुझे घरसे निकालकर मेरी स्त्रीको भी छीन लिया है। मैं उसीके भयसे अत्यन्त पीड़ित एवं दुःखी होकर इस पर्वतश्रेष्ठ ऋष्यमूकपर विचरता रहता हूँ॥ १७॥

सोऽहं त्रस्तो भये मग्नो वने सम्भ्रान्तचेतनः।
वालिना निकृतो भ्रात्रा कृतवैरश्च राघव॥ १८॥

'मुझे बराबर उसका त्रास बना रहता है। मैं भयमें डूबा रहकर भ्रान्तचित्त हो इस वनमें भटकता फिरता हूँ। रघुनन्दन! मेरे भाई वालीने मुझे घरसे निकालनेके बाद भी मेरे साथ वैर बाँध रखा है॥ १८॥

वालिनो मे भयार्तस्य सर्वलोकाभयंकर।
ममापि त्वमनाथस्य प्रसादं कर्तुमर्हसि॥ १९॥

'प्रभो! आप समस्त लोकोंको अभय देनेवाले हैं। मैं वालीके भयसे दुःखी और अनाथ हूँ, अतः आपको मुझपर भी कृपा करनी चाहिये'॥ १९॥

एवमुक्तस्तु तेजस्वी धर्मज्ञो धर्मवत्सलः।
प्रत्युवाच स काकुत्स्थः सुग्रीवं प्रहसन्निव॥ २०॥

सुग्रीवके ऐसा कहनेपर तेजस्वी, धर्मज्ञ एवं धर्मवत्सल भगवान् श्रीरामने उन्हें हँसते हुए-से इस प्रकार उत्तर दिया—॥ २०॥

उपकारफलं मित्रमपकारोऽरिलक्षणम्।
अद्यैव तं वधिष्यामि तव भार्यापहारिणम्॥ २१॥

'सखे! उपकार ही मित्रताका फल है और अपकार शत्रुताका लक्षण है; अतः मैं आज ही तुम्हारी स्त्रीका अपहरण करनेवाले उस वालीका वध करूँगा॥ २१॥

इमे हि मे महाभाग पत्रिणस्तिग्मतेजसः।
कार्तिकेयवनोद्भूताः शरा हेमविभूषिताः॥ २२॥

'महाभाग! मेरे इन बाणोंका तेज प्रचण्ड है। सुवर्ण-भूषित ये शर कार्तिकेयकी उत्पत्तिके स्थानभूत शरोंके वनमें उत्पन्न हुए हैं। (इसलिये अभेद्य हैं)॥ २२॥

कङ्कपत्रपरिच्छन्ना महेन्द्राशनिसंनिभाः।
सुपर्वाणः सुतीक्ष्णाग्राः सरोषा भुजगा इव॥ २३॥

'ये कंकपक्षीके परोंसे युक्त हैं और इन्द्रके वज्रकी भाँति अमोघ हैं। इनकी गाँठें सुन्दर और अग्रभाग तीखे हैं। ये रोषमें भरे भुजङ्गोंकी भाँति भयंकर हैं॥ २३॥

वालिसंज्ञममित्रं ते भ्रातरं कृतकिल्बिषम्।
शरैर्विनिहतं पश्य विकीर्णमिव पर्वतम्॥ २४॥

'इन बाणोंसे तुम अपने वाली नामक शत्रुको, जो भाई होकर भी तुम्हारी बुराई कर रहा है, विदीर्ण हुए पर्वतकी भाँति मरकर पृथ्वीपर पड़ा देखोगे'॥ २४॥

राघवस्य वचः श्रुत्वा सुग्रीवो वाहिनीपतिः।
प्रहर्षमतुलं लेभे साधु साध्विति चाब्रवीत्॥ २५॥

श्रीरघुनाथजीकी यह बात सुनकर वानरसेनापति सुग्रीवको अनुपम प्रसन्नता प्राप्त हुई और वे उन्हें बारंबार साधुवाद देते हुए बोले—॥ २५॥

राम शोकाभिभूतोऽहं शोकार्तानां भवान् गतिः।
वयस्य इति कृत्वा हि त्वय्यहं परिदेवये॥ २६॥

'श्रीराम! मैं शोकसे पीड़ित हूँ और आप शोकाकुल प्राणियोंकी परमगति हैं। मित्र समझकर मैं आपसे अपना दुःख निवेदन करता हूँ॥ २६॥

त्वं हि पाणिप्रदानेन वयस्यो मेऽग्निसाक्षिकम्।
कृतः प्राणैर्बहुमतः सत्येन च शपाम्यहम्॥ २७॥

'मैंने आपके हाथमें हाथ देकर अग्निदेवके सामने आपको अपना मित्र बनाया है। इसलिये आप मुझे अपने प्राणोंसे भी बढ़कर प्रिय हैं। यह बात मैं सत्यकी शपथ खाकर कहता हूँ॥

वयस्य इति कृत्वा च विस्रब्धः प्रवदाम्यहम्।
दुःखमन्तर्गतं तन्मे मनो हरति नित्यशः॥ २८॥

'आप मेरे मित्र हैं, इसलिये आपपर पूर्ण विश्वास करके मैं अपने भीतरका दुःख, जो सदा मेरे मनको व्याकुल किये रहता है, आपको बता रहा हूँ'॥ २८॥

एतावदुक्त्वा वचनं बाष्पदूषितलोचनः।
बाष्पदूषितया वाचा नोच्चैः शक्नोति भाषितुम्॥ २९॥

इतनी बात कहते-कहते सुग्रीवके नेत्रोंमें आँसू भर आये। उनकी वाणी अश्रुगद्गद हो गयी। इसलिये वे उच्च स्वरसे बोलनेमें समर्थ न हो सके॥ २९॥

[Free Download Ramayan In Gujarati Pdf]

Festivals (Hindu) of Sri Swami Sivananda things in the universe, origin, meaning and apply For You, Uses of Vastu Science Fates, Free Will and Vedic Astrology.

1. ramayan gujarati pdf
2. ramayan gujarati song
3. ramayan gujarati book

Miro has its unstable beginning far behind left, and Android support is clearly focused on building a user base beyond the niche of open source fans.. Dr RN Iyengar Planetary Astrology of Human Affairs by Dr BV Raman Logical Astrology MN Kedar Sanketanidhi (The Treasure of Learning) Saravali (Kalyana Varma) Example Horoscope Satya Jataka Jataka Stri Study of Vedic Astrology of Acharya Aryabhatt The Yavanajataka of Sphujidhvaja Uttarakalamritam From Kalidasa From Panditabushana V.. pdf Five Essential Essays Targeted Common Misconceptions in Our Vaishnava Society Today Fourteen Lessons in Yogi Philosophy and Oriental Occultism of Yogi Ramacharaka Forty Verses of Reality Sri Ramana Maharshi Francois Gautier: again, O India.. Nothing in relation to any rights you are entitled to as a consumer under Irish and EU law, which can not be changed or canceled.

ramayan gujarati pdf

ramayan gujarati, ramayan gujarati pdf, ramayan gujarati song, ramayan gujarati geet, ramayan gujarati book, ramayan gujarati video, ramayan gujarati story, ramayan gujarati audio, ramayan gujarati geeto, ramayan gujarati wikipedia, ramayan gujarati book pdf Maalaala mo kaya theme song mp3 download

Consequently, some of the exceptions and limitations in Sections 8 and 9 of the conditions are not if you are a consumer in a country of the European Union mind.. What can these conditions and all policies contained therein and other documents (including all rights) grant free licenses and obligations under this or this), in whole or in part, without prior notice, for whatever reason, including for this purpose internal restructuring (eg mergers or settlements).. You are responsible for all costs incurred in your account, including purchases from you or anyone you allow your account or sub-account or an associated account to use (including people with implicit, actual or perceived authority) or persons accessing your account, because you have not protected the authentication data. Activedock 1 1 18 Download Free

भी सालकी एक डाल तोड़ डाली और उसपर विनयशील लक्ष्मणको बैठाया॥ १४॥

सुखोपविष्टं रामं तु प्रसन्नमुदधिं यथा।
सालपुष्पावसंकीर्णे तस्मिन् गिरिवरोत्तमे॥ १५॥
ततः प्रहृष्टः सुग्रीवः श्लक्ष्णया शुभया गिरा।
उवाच प्रणयाद् रामं हर्षव्याकुलिताक्षरम्॥ १६॥

उस श्रेष्ठ पर्वतपर, जहाँ सब ओर सालके पुष्प बिखरे हुए थे, सुखपूर्वक बैठे हुए श्रीराम शान्त समुद्रके समान प्रसन्न दिखायी देते थे। उन्हें देखकर अत्यन्त हर्षसे भरे हुए सुग्रीवने श्रीरामसे स्निग्ध एवं सुन्दर वाणीमें वार्तालाप आरम्भ किया। उस समय आनन्दातिरेकसे उनकी वाणी लड़खड़ा जाती थी—अक्षरोंका स्पष्ट उच्चारण नहीं हो पाता था॥ १५-१६॥

अहं विनिकृतो भ्रात्रा चराम्येष भयार्दितः।
ऋष्यमूकं गिरिवरं हृतभार्यः सुदुःखितः॥ १७॥

'प्रभो! मेरे भाईने मुझे घरसे निकालकर मेरी स्त्रीको भी छीन लिया है। मैं उसीके भयसे अत्यन्त पीड़ित एवं दुःखी होकर इस पर्वतश्रेष्ठ ऋष्यमूकपर विचरता रहता हूँ॥ १७॥

सोऽहं त्रस्तो भये मग्नो वने सम्भ्रान्तचेतनः।
वालिना निकृतो भ्रात्रा कृतवैरश्च राघव॥ १८॥

'मुझे बराबर उसका त्रास बना रहता है। मैं भयमें डूबा रहकर भ्रान्तचित्त हो इस वनमें भटकता फिरता हूँ। रघुनन्दन! मेरे भाई वालीने मुझे घरसे निकालनेके बाद भी मेरे साथ वैर बाँध रखा है॥ १८॥

वालिनो मे भयार्तस्य सर्वलोकाभयंकर।
ममापि त्वमनाथस्य प्रसादं कर्तुमर्हसि॥ १९॥

'प्रभो! आप समस्त लोकोंको अभय देनेवाले हैं। मैं वालीके भयसे दुःखी और अनाथ हूँ, अतः आपको मुझपर भी कृपा करनी चाहिये'॥ १९॥

एवमुक्तस्तु तेजस्वी धर्मज्ञो धर्मवत्सलः।
प्रत्युवाच स काकुत्स्थः सुग्रीवं प्रहसन्निव॥ २०॥

सुग्रीवके ऐसा कहनेपर तेजस्वी, धर्मज्ञ एवं धर्मवत्सल भगवान् श्रीरामने उन्हें हँसते हुए-से इस प्रकार उत्तर दिया—॥ २०॥

उपकारफलं मित्रमपकारोऽरिलक्षणम्।
अद्यैव तं वधिष्यामि तव भार्यापहारिणम्॥ २१॥

'सखे! उपकार ही मित्रताका फल है और अपकार शत्रुताका लक्षण है; अतः मैं आज ही तुम्हारी स्त्रीका अपहरण करनेवाले उस वालीका वध करूँगा॥ २१॥

इमे हि मे महाभाग पत्रिणस्तिग्मतेजसः।
कार्तिकेयवनोद्भूताः शरा हेमविभूषिताः॥ २२॥

'महाभाग! मेरे इन बाणोंका तेज प्रचण्ड है। सुवर्ण-भूषित ये शर कार्तिकेयकी उत्पत्तिके स्थानभूत शरोंके वनमें उत्पन्न हुए हैं। (इसलिये अभेद्य हैं)॥ २२॥

कङ्कपत्रपरिच्छन्ना महेन्द्राशनिसंनिभाः।
सुपर्वाणः सुतीक्ष्णाग्राः सरोषा भुजगा इव॥ २३॥

'ये कंकपक्षीके परोंसे युक्त हैं और इन्द्रके वज्रकी भाँति अमोघ हैं। इनकी गाँठें सुन्दर और अग्रभाग तीखे हैं। ये रोषमें भरे भुजङ्गोंकी भाँति भयंकर हैं॥ २३॥

वालिसंज्ञममित्रं ते भ्रातरं कृतकिल्बिषम्।
शरैर्विनिहतं पश्य विकीर्णमिव पर्वतम्॥ २४॥

'इन बाणोंसे तुम अपने वाली नामक शत्रुको, जो भाई होकर भी तुम्हारी बुराई कर रहा है, विदीर्ण हुए पर्वतकी भाँति मरकर पृथ्वीपर पड़ा देखोगे'॥ २४॥

राघवस्य वचः श्रुत्वा सुग्रीवो वाहिनीपतिः।
प्रहर्षमतुलं लेभे साधु साध्विति चाब्रवीत्॥ २५॥

श्रीरघुनाथजीकी यह बात सुनकर वानरसेनापति सुग्रीवको अनुपम प्रसन्नता प्राप्त हुई और वे उन्हें बारंबार साधुवाद देते हुए बोले—॥ २५॥

राम शोकाभिभूतोऽहं शोकार्तानां भवान् गतिः।
वयस्य इति कृत्वा हि त्वय्यहं परिदेवये॥ २६॥

'श्रीराम! मैं शोकसे पीड़ित हूँ और आप शोकाकुल प्राणियोंकी परमगति हैं। मित्र समझकर मैं आपसे अपना दुःख निवेदन करता हूँ॥ २६॥

त्वं हि पाणिप्रदानेन वयस्यो मेऽग्निसाक्षिकम्।
कृतः प्राणैर्बहुमतः सत्येन च शपाम्यहम्॥ २७॥

'मैंने आपके हाथमें हाथ देकर अग्निदेवके सामने आपको अपना मित्र बनाया है। इसलिये आप मुझे अपने प्राणोंसे भी बढ़कर प्रिय हैं। यह बात मैं सत्यकी शपथ खाकर कहता हूँ॥

वयस्य इति कृत्वा च विस्रब्धः प्रवदाम्यहम्।
दुःखमन्तर्गतं तन्मे मनो हरति नित्यशः॥ २८॥

'आप मेरे मित्र हैं, इसलिये आपपर पूर्ण विश्वास करके मैं अपने भीतरका दुःख, जो सदा मेरे मनको व्याकुल किये रहता है, आपको बता रहा हूँ'॥ २८॥

एतावदुक्त्वा वचनं बाष्पदूषितलोचनः।
बाष्पदूषितया वाचा नोच्चैः शक्नोति भाषितुम्॥ २९॥

इतनी बात कहते-कहते सुग्रीवके नेत्रोंमें आँसू भर आये। उनकी वाणी अश्रुगद्गद हो गयी। इसलिये वे उच्च स्वरसे बोलनेमें समर्थ न हो सके॥ २९॥

Download

Iphoto For Mac El Capitan

ramayan gujarati song

Download Cook It Mod Apk Unlimited Money

Taiwan Holdings Limited, a Taiwan subsidiary (address: 14F, No 66 San Chong Road, Nangang District, Taipei, 115, Taiwan) and governs the following terms: (a) the terms and conditions between you and Yahoo ,.. Montriou Dharma Sastra Sacred Laws Arya (1879) Dialogue from the Upanishads of Swami Sivananda Saraswati Dictionary of Hindu Mythology and Religion by John Dawson Dictionary of Indian Philosophy Sanskrit Expression in English Defines Divine Society Swami Abhedananda (1900) Divine Darshana Shri Vallabhadhisa Divine We sd Dravida Saints Alkondaviili Govindacharya Dnyaneshwari Commenting on Gita 1290 The Doctrine of Mayan (Vedanta Philosophy) By Professor Prabhu Dutt Shastrii Is It So After Death I have already translated Nahna Bhulana of Gujrati into Hindi (written by Shri Harish Raghuvanshi from Surat), which is in the final phase of proofreading. Vat Invoice Format

ramayan gujarati book

Ntfs Drive For Mac Os

b0d43de27c Unduh File Font Picsay Pro Edit Apk Android Gratis

b0d43de27c

Audio Recording Software For Mac